अमेरिका में लोकप्रिय तिरुपुर के कपड़े

आप शायद ही विश्वास करें कि टॉमी हिल्फिगर, बनाना रिपब्लिक, फुबु जैसे नामी अमेरिकी ब्रांडों की एक दर्जन शर्ट रिटेल बाजार में सिर्फ ढाई हजार रुपये में मिल सकती हैं। लेकिन तिरुपुर के केदारपेट वस्त्र बाजार में यह कोई अचरज की बात नहीं। 600 से भी ज्यादा वस्त्र निर्यातकों के सरप्लस और मामूली खामी वाले सेकंड्स वस्त्र यहां उनकी अमेरिकी कीमत के सिर्फ दस फीसदी पर मिल सकते हैं। भारत में निटवीयर वस्त्रों के लिहाज से तिरुपुर अमेरिकी कंपनियों का बड़ा आउटसोर्सिंग केंद्र बन चुका है और यहां का रिटेल बाजार इस बात का नमूना है।

तिरुपर निर्यातक संघ के अध्यक्ष ए. शक्तिवेल बताते हैं, ''तिरुपुर से होने वाले वस्त्र निर्यात का 35 फीसदी हिस्सा अमेरिका को जाता है। अमेरिका के वस्त्र बाजार में लोकप्रिय

हर ब्रांड के कपड़े यहां से आउटसोर्स किए जा रहे हैं।'' यही कारण है कि तिरुपुर में किसी भी वस्त्र निर्यातक से यह पूछने पर कि वह अपना माल कहां भेजता है, पहला जवाब होगा- अमेरिका। तिरुपुर निर्यातक संघ के आंकड़ों पर गौर करें तो पिछले वित्त वर्ष में लगभग ढाई हजार करोड़ रुपये के वस्त्र तिरुपुर से अमेरिका निर्यात किए गए। इनमें वाल मार्ट, जे.सी. पेन्नी, गैप, सारा ली, टॉमी हिल्फिगर, टारगेट, फुबु, बनाना रिपब्लिक, जॉकी, के मार्ट, वॉन ह्यूसेन, एस. ओलिवर जैसे नामी ब्रांड शामिल हैं। स्टाइलमैन कंपनी के निदेशक और तिरुपुर निर्यातक संघ के पदाधिकारी पी. विद्याप्रकाश बताते हैं, ''तिरुपुर में ज्यादातर इकाइयां निर्यात के काम में जुटी हैं और इनमें से ज्यादातर अमेरिका और यूरोप के बाजार के लिए काम करती हैं।''

वस्त्र निर्यात के मोर्चे पर 20 साल पहले तिरुपुर की कोई पहचान नहीं थी। वर्ष 1985 में सिर्फ 15 करोड़ रुपये का निर्यात इस बात का सबूत है। लेकिन उसके बाद तिरुपुर से वस्त्र निर्यात में लगातार इजाफा हुआ है। आंकड़े इस बात के गवाह हैं कि नब्बे के दशक में भारत में उदारीकरण की हवा बहने के साथ तिरुपुर का वस्त्र निर्यात लगातार तेजी से बढ़ता गया। वर्ष 1990 में यह सिर्फ 290 करोड़ रुपये था जो 1995 में 1591 करोड़ रुपये और वर्ष 2000 में 3747 करोड़ रुपये तक जा पहुंचा। पिछले साल तिरुपुर से 7000 करोड़ रुपये से ज्यादा के वस्त्र निर्यात किए गए। विद्याप्रकाश के अनुसार, ''जनवरी 2005 से कोटा प्रणाली खत्म होने के बाद वस्त्र निर्यात में और तेजी से बढ़ोतरी हुई हालांकि प्रतिस्पर्धा बढ़ने से लाभ कम हो गया है।'' कोटा प्रणाली के तहत अमेरिका को वस्त्र निर्यात के लिए हर देश का कोटा तय था और उसी कोटे में अपनी भागीदारी के हिसाब से कोई भी कंपनी अमेरिका को वस्त्र निर्यात कर सकती थी।

तिरुपुर निर्यातक संघ के अनुसार यहां वस्त्र निर्यातक इकाइयों में तीन लाख से भी ज्यादा लोगों को रोजगार मिला हुआ है। शक्तिवेल के अनुसार, ''तिरुपुर में बेरोजगारी बिल्कुल नहीं है और इसका बड़ा श्रेय अमेरिका और अन्य देशों से मिल रहे वस्त्रों के ऑर्डर को जाता है। यहां श्रमिकों की 15 फीसदी कमी है।'' तिरुपुर में श्रमिकों की इस कमी को महसूस किया जा सकता है। हर कंपनी के बाहर बोर्ड पर टेलर, कटर, चेकर जैसे लोगों की जरूरत के बारे में नोटिस चिपके देखे जा सकते हैं। ग्लासी गारमेंट्स के जनरल मैनेजर ए. कार्तिकेयन बताते हैं, ''श्रमिकों की कमी के चलते यहां अप्रशिक्षित मजदूरों को भी न्यूनतम से ज्यादा मजदूरी मिलती है। तमिलनाडु सरकार द्वारा तय न्यनतम मजदूरी 84 रुपये प्रतिदिन है लेकिन ज्यादातर मजदूरों को सौ रुपये या इससे ज्यादा मिलते हैं। तिरुपुर ही नहीं आस-पास के बहुत से इलाकों से लोग यहां मजदूरी के लिए आते हैं।'' उनके अनुसार तिरुपुर के आर्थिक विकास ने अब यहां उत्तर भारत के व्यापारियों और मजदूरों को भी लुभाना शुरू कर दिया है।

तिरुपुर की निटवीयर इंडस्ट्री में इतने बड़े पैमाने पर लोगों को रोजगार में कहीं बच्चे तो शामिल नहीं हैं? निर्यातक संघ के अध्यक्ष शक्तिवेल सहित सभी उद्योगपतियों का इस बारे में कहना है कि आज तिरुपुर में बाल मजदूरी का शायद ही कोई मामला हो, निर्यातक इकाइयां तो इस तरह का जोखिम मोल ले ही नहीं सकतीं। विद्याप्रकाश के अनुसार, ''निर्यातकों को अंतर्राष्ट्रीय श्रम नियमों का पालन करना होता है वरना उनके उत्पादों पर रोक लग सकती है।'' वह खरीददारों से मिले इस तरह के प्रमाणपत्र दिखाते हैं। इनमें वर्ल्डवाइड रेस्पोंसिबल एपरेल प्रोडक्शन और वाल मार्ट के ग्रीन प्रमाणपत्र शामिल हैं। निटवीयर इंडस्ट्री से जुड़े कटर कुमारन से जब हमने इस बारे में पूछा तो उसका कहना था, ''तिरुपुर में बाल मजदूरी के बड़े पैमाने पर न होने का एक कारण तो यह है कि यहां कोई भी बेरोजगार नहीं है और सभी की आर्थिक स्थिति ठीक है। वे अपने बच्चों को पढ़ाना-लिखाना चाहते हैं। इसके अलावा बाहर की कंपनियों का भी सख्त

''तिरुपुर की कंपनियों के मालिक सीधे खरीददारों के संपर्क में रहते हैं। वे यह काम किसी जनरल मैनेजर के भरोसे नहीं छोड़ते। क्वालिटी, डिजाइन, डिलिवरी और संचार संपर्क के मामले में भी तिरुपुर खरा उतरा है।''

निर्यातक संघ के अध्यक्ष ए. शक्तिवेल

बाएं से: बुनाई मशीन पर काम करता कर्मचारी, बालू एक्सपोर्ट में बड़े पैमाने पर वस्त्रों की सिलाई।

निर्देश है और उनके लोग कभी-कभी दौरे पर भी आते हैं। इस डर के कारण मालिक लोग सस्ते बाल मजदूरों को रखने से डरते हैं। श्रमिक संगठन भी मजबूत हैं।''

निटवीयर उद्योग से तिरुपुर का समाज भी प्रभावित हुआ है। रोजगार के अवसरों में महिलाओं में नया आत्मविश्वास जगाया है। तिरुपुर की पंचायत थिरुमुरुगन पोंडी की उपाध्यक्ष लता शेखर कहती हैं, ''तिरुपुर की निटवीयर इंडस्ट्री की एक खास बात यह है कि यहां उदारीकरण का फायदा समाज के मध्यम और उच्च-मध्यम वर्ग को जाने के बजाय कमजोर वर्ग के लोगों को मिला है। कामगारों में 50 फीसदी महिलाएं हैं जिससे इस इलाके में महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया भी शुरू हुई है। उनमें आर्थिक ताकत आने से उनकी राय घरेलू फैसलों में अहम होने लगी है।''

तिरुपुर में ऐसा क्या है जो अमेरिकी कंपनियों को यहां आकर्षित करे? यह सवाल पूछने पर शक्तिवेल कहते हैं, ''तिरुपुर की कंपनियों के मालिक सीधे खरीददारों के संपर्क में रहते हैं। वे यह काम किसी जनरल मैनेजर के भरोसे नहीं छोड़ते। इसके अलावा क्वालिटी, डिजाइन, डिलिवरी और संचार संपर्क के मामले में भी तिरुपुर खरा उतरा है।''

तिरुपुर की कंपनी बालू एक्सपोर्ट की प्रबंध निदेशक निर्मला जगदीशन तिरुपुर के वस्त्र उद्योग के बारे में कहती हैं, ''1970 के दशक तक यहां पर ज्यादातर घरेलू बाजार के लिए वस्त्र तैयार होते थे और इसे देशभर में बनियान बनाने वाले कस्बे के रूप में जाना जाता था। सत्तर के दशक में इटली की एक महिला व्यवसायी एंटोनी वेरोना ने तिरुपुर का नाम सुना और यहां से वस्त्र मंगाना शुरू किया। तिरुपुर से सीधे निर्यात का संभवत: वह पहला मौका था।'' तिरुपुर में स्टाइलमैन टेक्सटाइल्स प्राइवेट लिमिटेड हो या पॉपी निटवीयर या फिर बालू एक्सपोर्ट या टेक्सपोर्ट सिंडीकेट इंडिया लिमिटेड, अपना एक तिहाई से तीन-चौथाई माल तक अमेरिकी कंपनियों को भेज रहे हैं। ये कंपनियां वाल मार्ट, गैप, फुबु, टारगेट, एस. ओलिवर, वान ह्यूसेन, कोह्ल, नेक्स्ट और फैमिली डालर जैसे ब्रांडों के लिए काम कर रहे हैं। कपड़ों के डिजाइन और स्टाइल में पहल खरीददार करते हैं या फिर निर्माता कंपनियां? विद्याप्रकाश बताते हैं, ''कंपनियां अपनी ओर से भी डिजाइन सुझाती हैं और हम भी नए-नए डिजाइनों के नमूने भेजते रहते हैं। इसमें फैशन विशेषज्ञों का भी मदद ली जा रही है। एक बार डिजाइन, रंग आदि तय हो जाने पर बड़े पैमाने पर काम शुरू किया जाता है।'' तिरुपुर की कंपनियों के लाभ के बारे में पूछने पर कोई भी मालिक साफ जवाब नहीं देता। लेकिन बालू एक्सपोर्ट के जनरल मैनेजर के. चंद्रशेखर कहते हैं, ''किसी-किसी डिजाइन या स्टाइल को हमें बिना मुनाफे के भी बेचना पड़ता है जबकि किसी अन्य डिजाइन में औसत से ज्यादा मुनाफा कमा लिया जाता है। इस मामले में हर उत्पाद पर लाभ एक समान नहीं होता।''

बढ़ते वस्त्र निर्यात ने तिरुपुर को कई और मोर्चों पर भी बढ़त दिलाई है। केंद्र सरकार की वस्त्र पार्क स्थापित करने की नीति का फायदा उठाने में यह शहर आगे रहा है और यहां 150 एकड़ इलाके में नेताजी एपरेल पार्क स्थापित किया गया है जिसमें निटवीयर इंडस्ट्री के लिए एक ही स्थान पर सभी सुविधाएं जुटाने का प्रयास किया गया है। नेताजी अपरेल पार्क का जिम्मा संभाल रहे प्रबंधक आर. सुब्रमण्यम कहते हैं, ''वस्त्र निर्यातक इकाइयों को पार्क द्वारा बिजली, पानी, बैंक, बीमा जैसी सारी सुविधाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध कराई गई हैं।'' पार्क ने जनवरी 2005 में काम करना शुरू किया। यहां कुल 52 कंपनियां काम कर रही हैं। सुब्रमण्यम के अनुसार पूरी क्षमता पर काम करने पर यहां 20 हजार लोगों को रोजगार मिलेगा और 1500 करोड रुपये के वस्त्र निर्यात किए जाएंगे। फिलहाल यहां से 500 करोड़ रुपये के वस्त्र निर्यात किए जा रहे हैं। तिरुपुर की निटवीयर क्षेत्र में अपनी बढ़त बनाए रखने के लिए तिरुपुर निर्यातक संघ ने एपरेल ट्रेनिंग एंड डिजाइन सेंटर और निफ्ट-टी फैशन इंस्टीट्यूट की स्थापना करवाने में पहल की है। शक्तिवेल के अनुसार, ''हमारी कोशिश है कि हम सिर्फ सस्ते वस्त्रों के लिए ही न जाने जाएं बल्कि विश्व में बदलते फैशन के अनुरूप खरीददारों को नए-नए विकल्प उपलब्ध कराते रहें।'' □